सच से बड़ा सच

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सच से बड़ा सच

कहानियाँ

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दी रूपान्तर : वीना
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

ISBN 978-81-89719-02-9

मूल्य : 25 रुपये

पहला संस्करण : जनवरी, 2014

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी-68, निरालानगर

लखनऊ-226020

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

Sach se Bada Sach, *Stories by* ***Ravindranath Thakur***

बड़ी ख़बर

'दादाजी आपने वादा किया था कि दुनिया की सारी बड़ी ख़बरें बतायेंगे,' कुसुमी ने मुझे याद दिलाया। 'वरना मैं शिक्षित कैसे होऊँगी?

दादाजी ने कहा 'बड़ी ख़बरों का झोला इतना भारी होता है कि उसे हर समय ढोया नहीं जा सकता। यह वाहियात बातों से ठूँस-ठूँसकर भरा है।'

'ठीक है, बेकार की बातों को छोड़कर मुझे बाकी बातें तो बताइए, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते?'

'ऐसा करने से बहुत कम ही काम की बातें बच जायेंगी। तुम सोचोगी कि यह

बिल्कुल भी बड़ी ख़बर नहीं है। लेकिन यह असली ख़बर होगी।'

'ठीक है, फिर मुझे असली ख़बर बताइये।'

'मैं ऐसा ही करूँगा। तुम एक भाग्यशाली लड़की हो। अगर तुम बी.ए. की डिग्री के लिए पढ़ रही होती, तो तुम्हारी मेज़ मूर्खतापूर्ण विचारों और वाहियात बातों के ऊँचे ढेर से भरी होती, तुम्हें झूठ और बकवास से भरी हुई नोटबुकों का बोझ उठाये फिरना पड़ता।'

'अच्छा, दादाजी। मुझे कुछ असली बड़ी ख़बरों के बारे में बताइए और ज़्यादा लम्बा मत खींचिये', कुसुमी ने कहा। 'चलिए, देखते हैं आप इसे कितनी अच्छी तरह कर सकते हैं।'

'ठीक है, तो सुनो।'

सौदागरों की नाव पर शान्ति थी। तभी चप्पुओं और पाल के बीच ज़ोर-शोर से झगड़ा शुरू हो गया। चप्पुओं ने एकजुट होकर विरोध की आवाज़ उठाई और अपना मामला नाविक के सामने रखा। 'हम अब और बर्दाश्त नहीं कर सकते,' वे बोले। 'आपका पाल घमण्ड से फूला रहता है, हमें अशिष्ट भीड़ कहता है, क्योंकि हम नाव के नीचे तख़्तों से जुड़े रहते हैं और दिन-रात हमें पानी में चलना पड़ता है, जबकि पाल पर हुक्म चलाने वाला कोई नहीं है और वह मस्ती में अपनी राह चला जाता है। वह सोचता है कि इससे वह श्रेष्ठ हो जाता है। आपको एक बार हमेशा के लिए फैसला कर देना होगा। कि आपके लिए किसका मोल ज़्यादा है? अगर सचमुच हम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं तो हम सब एक साथ इस्तीफ़ा दे देंगे। देखें आप हमारे बगैर कैसे अपनी नाव चलाते हैं।' नाविक समझ गया कि भारी मुसीबत आने वाली है। वह चप्पुओं को एक तरफ़ ले गया और उनसे फुसफुसाकर बोला, 'मेरे भाइयो! उस पर ज़रा भी ध्यान मत दो। वह तो सिर्फ डींग हाँकने वाला है। अरे, अगर तुम जैसे ताक़तवर लोग अपना पूरा ज़ोर नहीं लगायेंगे, तो यह नाव हिल भी नहीं सकती। वह पाल तो एक छैला है, नाव के ऊपर महज़ दिखावे की चीज़ है। एक तगड़ा हवा का झोंका और वह बिना फड़फड़ाहट के टूटकर ढेर हो जाता है, जबकि मैं जानता हूँ कि तुम हर दु:ख-सुख में मेरे साथ रहोगे। तुम ही हो जो हर मौसम में उसके घमण्ड के बोझ को ढोते रहते हो। उसकी हिम्मत कैसे हुई कि वह तुम्हें ऐसी घटिया गालियाँ देता है!'

लेकिन अब नाविक डर गया कि कहीं पाल ने उसकी बातों को सुन न लिया

हो। इसलिए वह ऊपर पाल के पास गया और उसके कानों में फुसफुसाया, 'प्रिय श्रीमान पाल, यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है, जिससे आपकी तुलना की जा सके। कौन कहता है कि आप सिर्फ एक नाव चलाते हैं? वह तो सिर्फ निचले दर्जे का श्रम है। आपको शोभा नहीं देता। आपको जो ठीक लगे वो करें। छोटे-मोटे कामों के लिए आपके दास तो हैं ही। हो सकता है थकान होने पर आप कभी-कभी थोड़े सिकुड़ जाते हैं लेकिन इससे क्या? भाई जान, उन चप्पुओं की बड़बड़ पर ध्यान मत दीजिए। मैंने उन्हें सख्ती से कठिन श्रम के कामों में लगा रखा है और उन्हें वह श्रम करना ही है। चाहे वे कितना भी बड़बड़ाएँ और तड़फडाएँ।'

यह सुनकर पाल ने अपना सीना फुला लिया और जम्हाई लेते हुए ऊपर बादलों को देखा। लेकिन ये लक्षण उसके लिए शुभ नहीं थे। तूफान आने के संकेत दिख रहे थे।

मगर चप्पू मज़बूत थे। वे लम्बे समय से नाव की बगलों में पड़े हुए चुपचाप अपना काम करते रहते हैं। लेकिन वे उठ खड़े होंगे और एक-न-एक दिन पलटकर वार करेंगे।

पाल का घमण्ड चर-चूर हो जाएगा। संसार को पता चल जायेगा कि ज्वार, तूफान और बारिश में चप्पू ही नाव को चलाते हैं।

कुसुमी ने पूछा, 'बस इतना ही?' क्या यही आपकी बड़ी ख़बर थी? आप शायद मज़ाक कर रहे हैं।'

दादाजी ने कहा, 'अभी यह मज़ाक लग रहा है, लेकिन एक दिन सबको पता चल जायेगा कि यह बड़ी ख़बर है।'

'अरे, तुम्हारे दादाजी एक दिन उन चप्पुओं से मिल जायेंगे और साथ-साथ चलना सीखेंगे!

'और मेरा क्या होगा?'

'तुम चप्पुओं के जोड़ों में तेल डाल देना जहाँ वे बहुत चरमराते हैं।'

दादाजी ने पूछा, 'अब तुम समझ गयी न? 'असली बड़ी ख़बर हमेशा बीज की तरह बहुत छोटी होती है। पेड़ से डालियाँ और शाखाएँ निकलने में समय लगता है।'

'अरे हाँ, मै समझ गयी।' कुसुमी ने कहा। उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे कुछ भी समझ नहीं आया। लेकिन कुसुमी की यह खासियत है कि अपने दादाजी के सामने वह इसे कभी स्वीकारती नहीं है। बेहतर यही है कि उसे बताया न जाए कि वह उतनी चतुर नहीं, जितनी कि उसकी बुआ इरु हुआ करती थी।

7 / सच से बड़ा सच

परी

'दादाजी आप ऐसी ही लम्बी-लम्बी कहानियाँ बुनते रहिए,' कुसुमी ने कहा। 'मन फेरने के लिए एक सच्ची कहानी क्यों नहीं सुनाते?'

मैंने कहा, 'इस संसार में चीजों की दो श्रेणियाँ होती हैं। एक सच और दूसरा सच से बड़ा सच। मैं सच से बड़े सच में विश्वास करता हूँ।'

'दादाजी लोग कहते हैं कि वे आपको बिल्कुल भी नहीं समझ सकते।'

'वे बिल्कुल सही हैं,' मैं मानता हूँ। 'लेकिन यह उनकी गलती है, मेरी नहीं।'

'क्योंकि तुम ज़रा अपने आपको देखो' मैंने उसे बताया। 'सभी लोग तुम्हें कुसुमी नाम से जानते हैं। और वह पूरी तरह सही है–इसके कई सबूत भी हैं। लेकिन मुझे यह पता चला है कि तुम परीदेश की परी हो। यह सच से बड़ा सच है।'

कुसुमी खुश हो गई। 'लेकिन आपको कैसे पता चला?' उसने पूछा

मैंने कहा: 'एक बार दूसरे दिन तुम्हारी परीक्षा थी, और तुम अपने बिस्तर पर बैठकर भूगोल याद कर रही थी, इसके बाद तुम ऊँघने लगी और तकिये पर गिरकर गहरी नींद में सो गयीं। यह पूर्णिमा की रात थी और चाँदनी खिड़की से उमड़ते हुए तुम्हारे चेहरे और तुम्हारी नीली आसमानी फ्राक पर पड़ी। मैंने साफ-साफ देख कि परियों के राजा ने, अपनी फरार भागी हुई परी का पता लगाने के लिए एक गुप्तचर जासूस भेजा था। वह नौका में बैठकर मेरी खिड़की के पास आया, और उसकी सफेद शॉल कमरे में पसर गई। उसने तुम्हें सिर से पैर तक देखा लेकिन पहचान नहीं सका कि तुम ही वो फरार हुई परी हो। उसने सोचा कि शायद तुम इस पृथ्वी की परी हो;

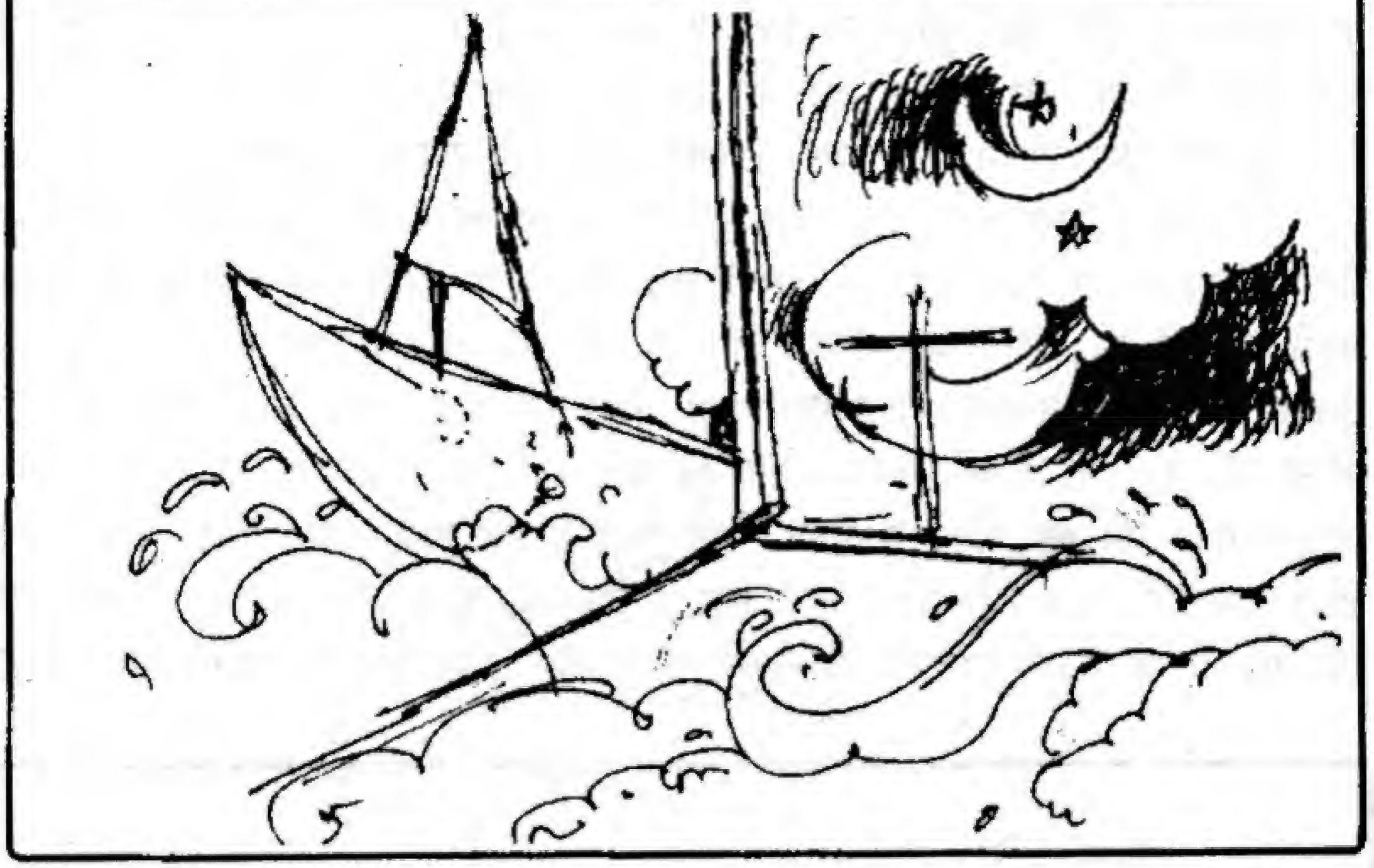

तुम शायद ऊपर उठाकर ले जाने के लिए बहुत भारी थी। इसी बीच चाँद और ऊँचा चढ़ गया, कमरा अँधेरे में डूब गया। शिशु वृक्ष के नीचे खड़े हुए जासूस ने अपना सिर हिलाया और वापस चला गया। तब मुझे पता चला कि तुम परीलोक की परी थी, धरती के गुरुत्व बल से यहाँ फँस गई।'

'मैं परीलोक से यहाँ कैसे पहुँची दादाजी?' कुसुमी ने पूछा।

मैंने कहा, 'तुम पारिजात-पुष्प के जंगल में तितली की पीठ पर आसमान में सवारी कर रही थी, तो तुम्हारी नज़र क्षितिज पर एक तरणी नाव पर पड़ी, यह सफेद बादलों से बनी थी, और हवा में झूल रही थी। तुम अपनी इच्छानुसार नाव में चली गई, और यह तब तक बहती रही, जब तक धरती पर नहीं पहुँच गई, वहाँ तुम्हारी माँ ने तुम्हें अपनी बाँहों में उठा लिया।'

कुसुमी खुशी से ताली बजाने लगी। 'क्या यह सब कुछ सचमुच संभव है, दादाजी?'

'फिर तुम वही बात दुहरा रही हो।' मैंने कहा। 'किसने कहा कि यह सच है? यह सच से बड़ा सच है।'

फिर उसने पूछा, 'क्या मैं कभी परीलोक वापस नहीं जा सकती?'

'शायद तुम जा सकती हो,' मैंने उत्तर दिया, 'अगर परीलोक की हवा का एक तगड़ा झोंका तुम्हारे सपनों की नाव के पाल को छू जाए।'

'सोचिये, अगर ऐसा हो जाये तो मुझे वापस आने का रास्ता कैसे मालूम होगा? क्या परीलोक बहुत दूर है?-

'यह बहुत पास है,' मैंने उत्तर दिया।

'कितने पास?'

'इतना करीब जितनी कि तुम अभी मेरे करीब हो। तुम्हें अपनी बिस्तर से उठकर वहाँ नहीं जाना पड़ेगा। बस दूसरी रात का इन्तज़ार करो, जब चाँद की रोशनी खिड़की से आती है, और अगर तुम बाहर देखती हो, तो कोई संदेह नहीं रह जाएगा। तुम देखोगी कि बादलों की नौका चाँद की किरण के साथ तुम्हारी तरफ बह रही होगी। लेकिन वो नाव तुम्हारे लिए अब और कुछ नहीं करेगी: अब तुम धरती की सीमा में रहने वाली परी हो। तुम अपने शरीर को बिस्तर में छोड़ जाओगी। और तुम्हारी सच यहाँ पृथ्वी पर रहेगा, जबकि सच से बड़ा सच उड़ जायेगा, ऊपर और दूर, जहाँ हममें से कोई नहीं पहुँच सकता।'

'यह तो बहुत अच्छा है,' कुसुमी ने कहा, 'अगली पूर्णिमा की रात मैं खिड़की से आकाश तरफ देखूँगी। दादाजी, क्या आप मेरा हाथ पकड़कर मेरे साथ आयेंगे?'

'नहीं, लेकिन यहाँ बैठे-बैठे भी मैं तुम्हें इसका रास्ता बता सकता हूँ। मेरे पास ऐसी शक्ति है - मैं सच से बड़े सच वाली चीजों का सौदागर हूँ।'

सच से बड़ा सच

'दादाजी आप उस दिन जिस सच से बड़े सच के बारे में बात कर रहे थे क्या वह सिर्फ परीलोक में मिल सकता है?'

'बिल्कुल नहीं, मेरी प्यारी,' मैंने कहा। हमारी इस दुनिया में इसका बहुत बड़ा भाग है। तुम्हें सिर्फ देखने की जरूरत है। लेकिन तुम्हारे पास ऐसी नज़र होनी चाहिए जो इसे पहचान सके।'

'क्या आप इसे देख सकते हैं?'

'हाँ, मेरे पास ऐसी शक्ति है। मैं ऐसे दृश्यों को देख लेता हूँ, जो देखने के लिए नहीं बने हैं। जब तुम मेरी बगल में बैठकर भूगोल सीखती हो, तो मैं अपनी खुद की पढ़ाई के बारे में सोचता हूँ। जब तुम अपनी किताब में यांग-त्से क्यांग नदी के बारे

में पढ़ती हो तो मैं उन कल्पनाओं में खो जाता हूँ जिनका भूगोल का इम्तहान पास करने में कोई उपयोग नहीं है। अब भी मैं नदी के किनारे गुज़र रहे उस लम्बे कारवाँ को देख सकता हूँ जो रेशम की गाँठों को लेकर जा रहा था। एक बार मैं भी उन ऊँटों की पीठ पर सवार होकर कहीं जा रहा था।'

'अरे छोड़िये दादाजी। मैं जानती हूँ आपने अपने जीवन में कभी ऊँट की सवारी नहीं की।'

'ओह दीदी, आप बहुत सारे प्रश्न पूछती हैं।'

'चिन्ता मत करिए, बोलते रहिए। इसके बाद क्या हुआ? आपको ऊँट कहाँ से मिला?'

'पहले ही तुम एक प्रश्न पूछ चुकी हो! मैं कभी ऊँट खोजने की चिन्ता नहीं करता : ऐसे ही मैं किसी एक पर बैठ जाता हूँ। चाहे जो भी मैं दूसरी जगहों की यात्रा करता हूँ, मुझे यात्राएँ करने से कोई ताकत नहीं रोक सकती है। मैं ऐसा ही हूँ।'

'अच्छा चलिये, उसके बाद क्या हुआ।?'

'इसके बाद मैं एक के बाद एक बहुत सारे शानदार शहरों से गुजरा - फुचुंग, हांगचाऊ, चुंगकुंग, मैंने बहुत सारे रेगिस्तानों को पार किया, सितारों ने मुझे रात में रास्ता दिखाया। और फिर मैं उश-कुश पहाड़ों के नीचे जंगल में पहुँचा - जैतून के बागों को छोड़ते हुए, अंगूर के बागों से गुजरते हुए, चीड़ के वनों के साथ। मुझे चोरों ने घेर लिया, और एक बड़ा सफेद भालू अपने पीछे के पैरों पर मेरे सामने खड़ा था।'

'आपको इस तरह घूमने का समय कब मिला?'

'अरे, मैं ये यात्राएँ तब करता था जब बाकी कक्षा अपने इम्तहान की पढ़ाई में व्यस्त होती थी।'

'लेकिन फिर आपने इम्तहान कैसे पास किये?'

'यह तो बहुत आसान है–मैं कभी पास नहीं हुआ।'

'ठीक है, चलिए कहानी जारी रखिए।'

'उस यात्रा पर निकलने के कुछ ही समय पहले मैंने अलिफ लैला की कहानियों में चीन की सुन्दर राजकुमारी के बारे में पढ़ा था। और अजूबों में अजूबा – मैंने अपनी यात्राओं में संयोगवश उसे पा लिया। यह फुचाओ नदी के किनारे की बात थी। उतरने की जगह संगमरमर से बनी हुई थी, जो नीले पत्थर के पैवेलियन तक जाती थी। वहाँ हर तरफ एक चम्पक का पेड़ था, इसके नीचे पत्थर का शेर था। धूपबत्ती सोने के पात्र में जलाई जाती थी। एक सेविका राजकुमारी के बाल सँवार रही थी, जबकि दूसरी दो सेविकाएँ उसे हवा करती थीं। किसी तरह से अचानक मैं उसके सामने प्रकट हुआ। वह अपने दूध की तरह सफेद मोर को अनार के बीज खिला रही थी। उसने बात शुरू की और पूछा: 'तुम कौन हो?'

'मुझे अचानक याद आया कि मैं बंगाल का शिरोमणि राजकुमार था।'

'यह कैसे हो सकता था? आप तो बस –'

'फिर से प्रश्न! मैं तुम्हें बता रहा हूँ न कि उस दिन के लिए मैं बंगाल का शिरोमणि राजकुमार था, और इसी बात ने मुझे बचा लिया : नहीं तो वह मुझे वहाँ बाहर फेंक चुकी होती। बदले में उसने मुझे सोने के प्याले में चाय दी। चाय हेमपुष्प से सजी हुई, सबसे शानदार खुशबू से भरी हुई थी।'

'क्या इस सबके बाद उसने आपसे शादी की?'

'अब यह तो राज़ की बात है। आज तक कोई इसे नहीं जानता।'

कुसुमी ने ताली बजाई : ऐसा हुआ था, मैं जानती हूँ कि ऐसा ही हुआ! आपने राजकुमारी से बहुत शानदार तरीके से विवाह किया।'

असल में वह यह जानकर बहुत दुखी होती कि यह सब उस तरह नहीं हुआ। मगर मैंने कहा, 'हाँ अन्त में उसने मुझसे विवाह किया। मुझे मेरी राजकुमारी अंगचानी मिल गई, और इसके साथ हैंगचाओ का राज्य भी। और फिर–'

'फिर क्या? क्या आप फिर से अपने ऊँट पर बैठकर आ गए?'

'और नहीं तो क्या? मैं वापस आकर तुम्हारा दादा कैसे बना? हाँ मैं अपने ऊँट की पीठ पर चढ़ गया, ऊँट जो पता नहीं कहाँ चला गया। फुसुंग चिड़िया मेरे सिर पर खुशी से गाते हुए उड़ गई।'

'फुसुंग चिड़िया! यह कहाँ रहती है?'

'अरे, यह कहीं भी नहीं रहती है, लेकिन इसके पूँछ के पंख नीले हैं, इसके पंख पीले हैं और इसके कंधों पर भूरे रंग का चकत्ता है। वे बहुत सारी थीं और वे जाकर हचांग के पेड़ पर बस गईं।'

'मैने कभी हचांग वृक्ष के बारे में नहीं सुना।'

'मैंने भी नहीं सुना – मैंने इसके बारे में तभी सोचा, जब मैं तुम्हें कहानी सुना रहा था। मैं ऐसा ही हूँ। मैं पहले से कभी तैयार नहीं रहता – मैं जो भी समझता हूँ या मुझे जो भी समझ में आता है, तुम्हें बताता हूँ, जैसे कि मैं इसे देख रहा हूँ। आज मेरी फुसुंग चिड़िया समुद्र के पार उड़ चुकी है। मुझे लम्बे समय सें इसका समाचार नहीं मिला।'

'लेकिन आपकी शादी का क्या हुआ? और राजकुमारी?'

'मेरी प्यारी, मैं तुम्हें इसका जवाब नहीं दूँगा, तो यही बेहतर है कि तुम पूछना बंद करो। और तुम दुखी मत हो। तुम तब पैदा भी नहीं हुई थी, याद रखो।'

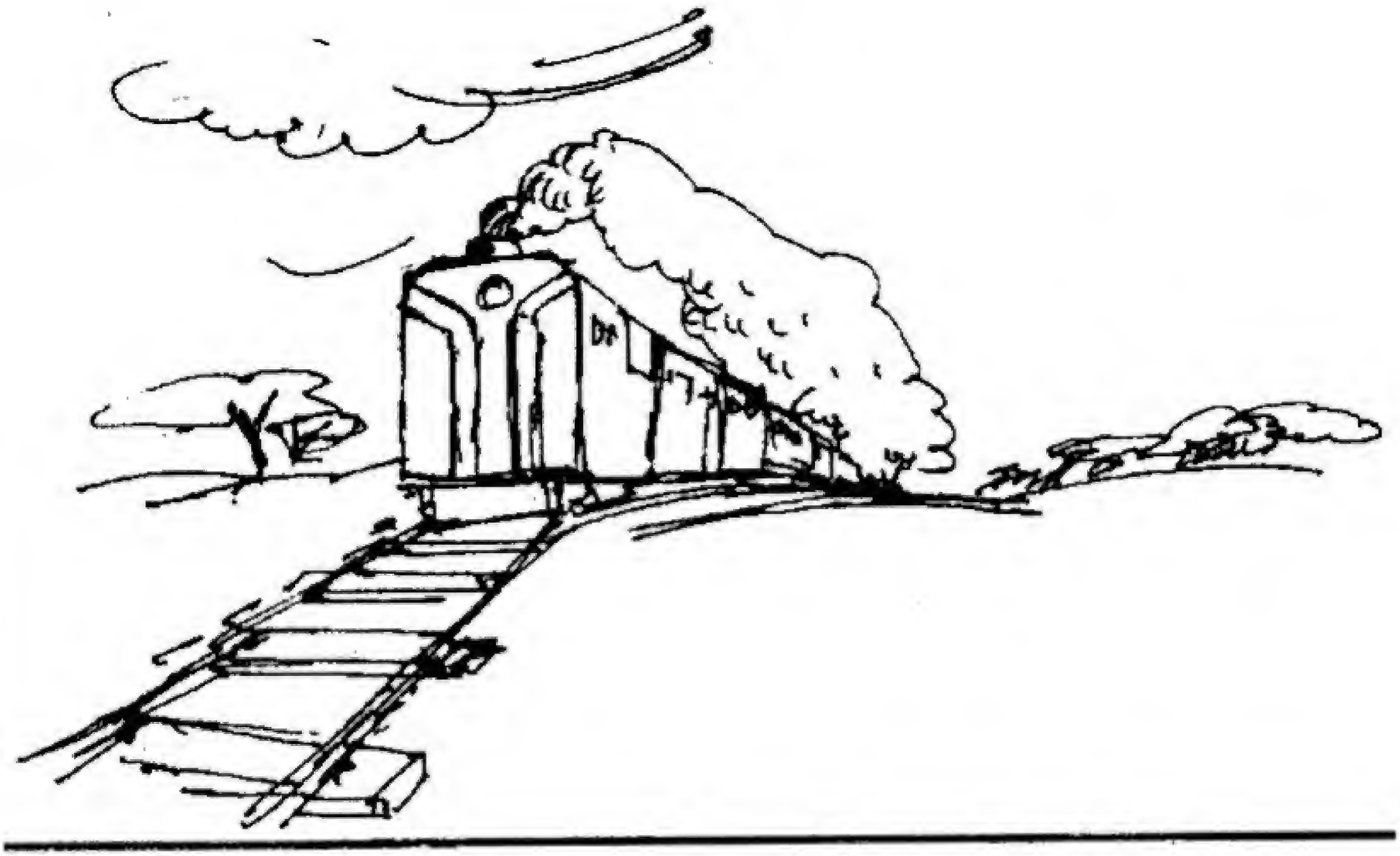

चूहों की दावत

'यह ठीक नहीं है,' लड़कों ने कहा। हम एक नये अध्यापक से नहीं पढ़ेंगे।'

उन्हें एक नये संस्कृत के अध्यापक मिलने वाले थे, जिनका नाम कलिकुमार तर्कालंकार था।

छुट्टियाँ खत्म हो गई थीं, और बच्चे रेलगाड़ी में बैठकर वापस स्कूल जा रहे थे। एक शैतान विद्यार्थी ने पहले से ही नये अध्यापक का नाम बदलकर **कालो कुमड़ो टटका लंका,** कर दिया था, जिसका अर्थ है 'काला कद्दू और तीखी लाल मिर्च'।

वे काले कद्दू की बलि नाम की तुकबंदी बनाकर गा रहे थे।

अरखोला में एक बुजुर्ग सज्जन रेलगाड़ी में सवार हुए। उनके पास बिस्तरबन्द, कुछ गट्ठर, एक बड़ा संदूक और दो या तीन बड़े मिट्टी के बर्तन थे, जिनका ऊपरी हिस्सा कपड़े से बँधा हुआ था। एक शरारती लड़का, जिसको सभी बिचकुन कहते थे, उन पर एक बार चिल्लाया: 'नीचे जाओ, बूढ़े मूर्ख, यहाँ जगह नहीं है। दूसरे डिब्बे में जाओ।'

बूढ़े आदमी ने कहा, 'पूरी गाड़ी खचाखच भरी हुई थी, वहाँ पर कहीं भी जगह नहीं मिल रही है। चिन्ता मत करो, मैं यहाँ एक कोने में बैठूँगा और मैं तुम्हें बिल्कुल भी परेशान नहीं करूँगा।'

उन्होंने बिस्तर को फर्श पर बिछाया, और वहाँ अपनी जगह बना ली। फिर वे उनकी तरफ मुड़े और पूछा, 'मेरे बच्चो, तुम कहाँ जा रहे हो और किसलिए?'

'किसी का काम तमाम करने,' बिचकुन ने कहा।

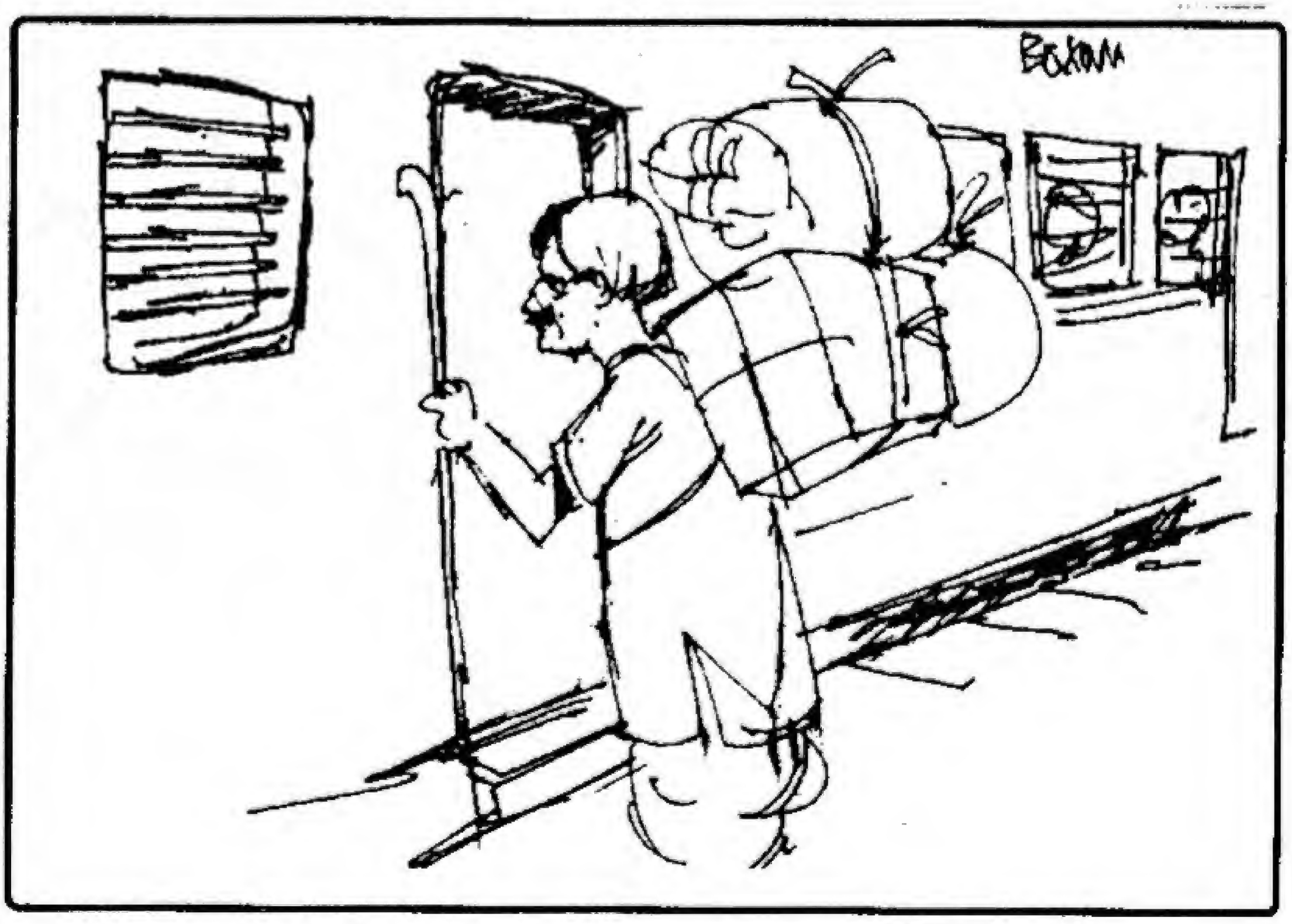

'और वो कौन हो हो सकता है?' बूढ़े आदमी ने पूछा।

'कालो कुमरो तटका लंका,' उत्तर मिला, और बच्चे खुशी खुशी गीत गाने लगे–

'काला कद्दू और लाल तीखी मिर्च,
बहुत जल्दी ही बनायेंगे हम उसे मूर्ख।'

आसनसोल स्टेशन पर गाड़ी थोड़ी देर के लिए रुकी, और बूढ़ा आदमी नीचे हाथ-मुँह धोने के लिए उतरा। जैसे ही वह वापस आया बिचकुन चिल्लाया,

'श्रीमान, इस कोच से बाहर जाइए, अगर आप अपना भला चाहते हैं।'

'क्यों, क्या बात है?'

'यहाँ हर तरफ चूहे आ गये हैं।'

'चूहे! ऐसा मत कहो।'

'खुद देखिए। देखिए उन्होंने आपके बर्तनों का वहाँ क्या कर डाला है।' बूढ़े सज्जन ने देखा कि एक बर्तन में रखी हुई सारी मीठी गोलियाँ खत्म हो गई हैं और दूसरे बर्तनों में मिठाइयों का एक टुकड़ा भी नहीं बचा।

बिचकुन ने कहा, 'आपकी उस पोटली में भी जो कुछ रखा था वे उसे भी लेकर भाग चुके हैं।'

पोटली में उनके बगीचे के पाँच पके हुए आम थे।

'बेचारे प्राणी,' उसने मुस्कराते हुए कहा,

'वे शायद बहुत ज्यादा भूखे रहे होंगे!'

'अरे नहीं, वे तो हमेशा ऐसे ही रहते हैं,' बिचकुन ने उन्हें बताया। 'अगर वे भूखे नहीं भी हैं, तो भी वे ऐसा ही करेंगे।'

लड़के ठट्ठा मारकर हँसने लगे: 'यह सच है श्रीमान। कि अगर यहाँ कुछ और ज्यादा होता, तो वे उसे भी खा चुके होते।' आदमी ने कहा, 'यह मेरी गलती है।' 'अगर मुझे पता होता कि गाड़ी में इतने सारे चूहे होंगे, तो मैं इससे अच्छी चीज़ें लाता।'

बच्चे थोड़े निराश हुए, जब उन्होंने देखा कि बूढ़े को क्रोध नहीं आया। अगर वे उसे अपना आपा खोते हुए देखते तो उन्हें ज्यादा मज़ा आता। वर्धमान स्टेशन पर घण्टे भर की प्रतीक्षा थी। उन्हें गाड़ियाँ बदलनी थीं।

सज्जन व्यक्ति ने कहा, 'लड़को, अब आपको और तंग नहीं करूँगा। इस बार मैं दूसरे डिब्बे में अपने लिए जगह ढूँढ़ लूँगा।

'अरे नहीं, आप हमारे साथ चलिए,' उन्होंने शोर मचाया। 'अगर आपकी पोली में कुछ छूटा है, तो हम पूरे रास्ते उसकी देखभाल करेंगे। हम आपसे वादा करते हैं कि अब आप कुछ नहीं खोयेंगे।'

'बहुत अच्छा,' सज्जन व्यक्ति ने कहा। तुम आगे जाकर गाड़ी में बैठों मैं एक मिनट में तुम्हारे साथ आता हूँ।'

वे गाड़ी में चढ़ गये। कुछ देर बाद एक मिठाईवाला अपना ठेला लुढ़काते हुए उनकी खिड़की पर आया, सज्जन व्यक्ति उसके पास ही खड़े थे।

उन्होंने हर एक को एक-एक पेपर बैग भरकर मिठाइयाँ दीं, कहा, इस बार चूहे भूखे नहीं रहेंगे। बच्चे खुशी से चिल्लाये। इसके बाद एक आम बेचने वाला अपनी टोकरी के साथ आया, और आम भी दावत में शामिल हो गये। लड़कों ने महाशय से पूछा, 'हमें बताइए आप कहाँ जा रहे हैं और क्यों।'

'मैं एक नौकरी ढूँढ़ रहा हूँ,' उन्होंने बताया। 'मुझे जहाँ भी नौकरी मिल जाएगी वहीं चला जाऊँगा।'

'आप किस तरह का काम कर सकते हैं?'

'मैं एक स्कूल-अध्यापक हूँ, मैं संस्कृत पढ़ाता हूँ।'

उन्होंने तालियाँ बजाई। 'फिर तो आप हमारे स्कूल में पढ़ाने आ जाइए।'

'लेकिन वे मुझे क्यों लेंगे?'

'हम उन्हें मना लेंगे,' उन्होंने उन्हें विश्वास दिलाया। हम कालो कुमड़ो टटका लंका को अपने स्कूल में पैर नहीं रखने देंगे, आप देखिएगा।'

'तुम लोग मेरे लिए मुश्किल पैदा कर रहे हो। सोचो, अगर तुम्हारा सचिव मुझे पसन्द नहीं करेगा तो क्या होगा?'

'उसके लिए यही अच्छा होगा कि वो आपको पसन्द करे – नहीं तो हम सभी एक साथ स्कूल छोड़ देंगे।'

'फिर तो बहुत अच्छा है, मेरे बच्चो – मुझे अपने स्कूल ले चलो।'

गाड़ी स्टेशन पर रुकी। स्कूल समिति के सचिव स्वयं प्लेटफॉर्म पर इन्तजार कर रहे थे। बूढ़े महाशय को उतरते हुए देखकर, वे उनसे मिलने के लिए आये।

'आपका स्वागत है, मास्टर तर्कालंकार महोदय। आपके रहने की जगह आपके लिए तैयार है।' और उन्होंने झुककर बूढ़े सज्जन के पैर छुए।

ISBN 81 87719 02-5

अनुराग ट्रस्ट

लखनऊ